International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

# भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की राजनीतिक एवं सामाजिक भागीदारी का ऐतिहासिक मूल्यांकन

**Sarita**
Research Scholar, Department of History, Monad University
**Dr. Raj Singh**
Assistant Professor, Department of History, Monad University

## सारांश

यह शोध पत्र भारतीय स्वतंत्रता संग्राम (1857–1947) में महिलाओं की राजनीतिक एवं सामाजिक भागीदारी का एक व्यापक ऐतिहासिक अध्ययन प्रस्तुत करता है। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य स्वतंत्रता संग्राम के विभिन्न चरणों में महिलाओं के योगदान, उनकी नेतृत्व क्षमता, सामाजिक चुनौतियों, संघर्ष एवं त्याग तथा ऐतिहासिक मूल्यांकन का विश्लेषण करना है। शोध में 300 प्रतिभागियों के संश्लिष्ट आँकड़ों का उपयोग करते हुए सात प्रमुख निर्माणोंकृ सहभागिता, नेतृत्व एवं संगठन क्षमता, सामाजिक परिस्थितियाँ एवं चुनौतियाँ, विभिन्न आंदोलनों में योगदान, संघर्ष एवं त्याग, महिला सशक्तिकरण तथा ऐतिहासिक मूल्यांकनकृका विश्लेषण किया गया है। परिणाम बताते हैं कि उत्तरदाताओं में महिलाओं की भूमिका के प्रति अत्यंत सकारात्मक धारणा है, जिसका प्रमाण सभी सात निर्माणों का कुल औसत 3.878 (5–बिंदु पैमाने पर) है। विशेष रूप से ऐतिहासिक मूल्यांकन (माध्य 3.943), संघर्ष एवं त्याग (माध्य 3. 929) तथा विभिन्न आंदोलनों में योगदान (माध्य 3.922) को सर्वाधिक महत्व प्राप्त हुआ। परिकल्पना परीक्षण से पता चला कि ज्ञान–स्तर ($r = 0.68$, $p < .01$), लिंग ($t = 2.14$, $p < .05$), आयु ($F = 4.52$, $p < .01$) तथा शिक्षा ($F = 3.21$, $p < .05$) के आधार पर दृष्टिकोण में सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर पाए गए। प्रमुख निर्माणों के बीच प्रबल सकारात्मक सहसंबंध पाए गएकृसहभागिता और ऐतिहासिक मूल्यांकन ($r = 0.762$), सामाजिक चुनौतियाँ और ऐतिहासिक मूल्यांकन ($r = 0.769$), तथा नेतृत्व और संघर्षध्त्याग ($r = 0.751$)। अध्ययन यह निष्कर्ष निकालता है कि महिलाओं का योगदान मात्र सहायक भूमिका तक सीमित नहीं था, अपितु वे स्वतंत्रता संग्राम की सक्रिय सहभागी, नेतृत्वकर्ता, संगठनकर्ता, संघर्षशील व्यक्तित्व, सामाजिक परिवर्तन की वाहक तथा महत्वपूर्ण ऐतिहासिक योगदानकर्ता थीं। शोध सुझाव देता है कि पाठ्यक्रम में महिला स्वतंत्रता सेनानियों के योगदान को अधिक स्थान दिया जाना चाहिए, शैक्षणिक सामग्री का विकास किया जाना चाहिए, ऐतिहासिक स्मारकों एवं

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

संग्रहालयों में समग्र प्रस्तुति सुनिश्चित की जानी चाहिए, तथा अभिलेखीय संरक्षण एवं सार्वजनिक जागरूकता अभियानों पर बल दिया जाना चाहिए।

**''मुख्य शब्द:''** भारतीय स्वतंत्रता संग्राम, महिला सहभागिता, नेतृत्व, सामाजिक चुनौतियाँ, संघर्ष एवं त्याग, महिला सशक्तिकरण, ऐतिहासिक मूल्यांकन

## 1. परिचय

### 1.1 पृष्ठभूमि

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका एवं योगदान का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य किए बिना अधूरा रहेगा। भारत की महिलाओं द्वारा किए गए बलिदान को सबसे महत्वपूर्ण स्थान दिया जाएगा। उन्होंने सच्ची भावना और अदम्य साहस के साथ लड़ाई लड़ी और हमें स्वतंत्रता दिलाने के लिए विभिन्न यातनाओं, शोषण और कठिनाइयों का सामना किया। जब अधिकांश पुरुष स्वतंत्रता सेनानी जेल में थे, तब महिलाएँ आगे आईं और उन्होंने संघर्ष की कमान संभाली। भारत की सेवा के लिए अपने समर्पण और अटूट निष्ठा के लिए इतिहास में जिन महान महिलाओं के नाम दर्ज हैं, उनकी सूची बहुत लंबी है। 1817 से 1947 तक भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिकाएँ ही शुरू हो गई थीं। भीमा बाई होल्कर ने ब्रिटिश कर्नल मैल्कम के विरुद्ध बहादुरी से लड़ाई लड़ी और गुरिल्ला युद्ध में उसे हराया। कित्तूर की रानी चेन्नम्मा, अवध की रानी बेगम हजरत महल सहित कई महिलाओं ने 19वीं सदी में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के विरुद्ध लड़ाई लड़ी, जो श1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्रामश से लगभग 30 वर्ष पहले की बात थी।

1857 के स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं द्वारा निभाई गई भूमिका सराहनीय थी और विद्रोह के नेताओं ने भी इसकी प्रशंसा की थी। रामगढ़ की रानी, रानी जिंदन कौर, रानी तासी बाई, बैजा बाई, चौबे रानी और तापसीनी महारानी ने युद्ध के मैदान में अपनी सेना का साहसिक नेतृत्व किया। रानी लक्ष्मीबाई झाँसी की वीरता और शानदार नेतृत्व ने वास्तविक देशभक्ति का एक उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया। राष्ट्रीय आंदोलन में शामिल होने वाली भारतीय महिलाएँ शिक्षित और उदार परिवारों से थीं, साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों तथा सभी वर्गों, सभी जातियों, धर्मों और समुदायों से भी थीं। 20वीं सदी में सरोजिनी नायडू, कस्तूरबा गांधी, विजयलक्ष्मी पंडित और एनी बेसेंट ऐसे नाम हैं जिन्हें युद्ध के मैदान और राजनीतिक क्षेत्र दोनों में उनके विलक्षण योगदान के लिए आज भी याद किया जाता है।

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

### 1.2 स्वतंत्रता संग्राम का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के शासनकाल से आरंभ होता है। 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम, जिसे ब्रिटिश इतिहासकारों ने श्सिपाही विद्रोहश की संज्ञा दी, वास्तव में भारतीय जनता के ब्रिटिश शासन के विरुद्ध पहला व्यापक सशस्त्र संघर्ष था। इस विद्रोह की असफलता के बाद ब्रिटिश सरकार ने ईस्ट इंडिया कंपनी का शासन समाप्त कर भारत को प्रत्यक्ष रूप से ब्रिटिश ताज के अधीन कर दिया। इसके पश्चात भारतीय समाज में राष्ट्रीय चेतना का विकास होना शुरू हुआ। 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना इस दिशा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर थी। प्रारंभ में कांग्रेस ने संवैधानिक माध्यमों से माँगों को उठाने का कार्य किया, लेकिन 1905 के बंगाल विभाजन के विरोध ने राष्ट्रीय आंदोलन को एक नई दिशा प्रदान की।

महिलाओं की भागीदारी 1817 में ही शुरू हो गई थी। प्रथम विश्व युद्ध के बाद भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में एक नया मोड़ आया। महात्मा गांधी के नेतृत्व में असहयोग आंदोलन (1920–22), सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930–34) और भारत छोड़ो आंदोलन (1942) ने जनआंदोलन का स्वरूप लिया। इन आंदोलनों ने न केवल ब्रिटिश शासन की नींव हिलाई, बल्कि भारतीय समाज के हर वर्गकृकिसान, मजदूर, छात्र, महिलाएँकृको राष्ट्रीय संघर्ष से जोड़ा। 1917 में एनी बेसेंट कांग्रेस की प्रथम महिला अध्यक्ष बनीं, जो भारतीय राजनीति में महिलाओं के बढ़ते प्रभाव का प्रतीक था।

### 1.3 शोध समस्या का प्रतिपादन

इस अध्ययन की मूल समस्या यह है कि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भागीदारी के महत्व को ऐतिहासिक शोध में पर्याप्त रूप से रेखांकित नहीं किया गया है। यद्यपि रानी लक्ष्मीबाई, सरोजिनी नायडू, अरुणा आसफ अली, कमलादेवी चट्टोपाध्याय, कस्तूरबा गांधी, विजयलक्ष्मी पंडित, एनी बेसेंट, भीकाजी कामा, कल्पना दत्त, प्रीतिलता वाड्डेदार, उषा मेहता, हंसा मेहता, दुर्गाबाई देशमुख, रमेश्वरी नेहरू, सत्यवती देवी, सुभद्रा जोशी, मुथुलक्ष्मी रेड्डी, सावित्रीबाई फुले, पंडिता रमाबाई, रमाबाई रानाडे, मार्गरेट कजिन्स जैसी कुछ प्रमुख महिला नेताओं का उल्लेख इतिहास में मिलता है, लेकिन सामान्य महिलाओंकृमध्यवर्गीय, ग्रामीण, अशिक्षित, दलित और अल्पसंख्यक महिलाओंकृके योगदान को अक्सर अनदेखा कर दिया गया है। ऐतिहासिक अभिलेखों में महिलाओं की भागीदारी को प्रायः पुरुषों के सहायक के रूप में प्रस्तुत किया गया है, न कि स्वतंत्र एजेंट के रूप में। इसके कई कारण हैं: (1) अधिकांश ऐतिहासिक दस्तावेज पुरुषों द्वारा लिखे गए थे, (2) औपनिवेशिक इतिहासकारों ने जानबूझकर

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

महिलाओं के योगदान को कम करके दिखाया, (3) भारतीय राष्ट्रवादी इतिहासकारों ने भी महिलाओं के योगदान को श्सहायकश धारा के रूप में प्रस्तुत किया, (4) महिलाओं ने स्वयं अपने अनुभवों को लिखित रूप में दर्ज करने की परंपरा विकसित नहीं की, और (5) महिलाओं की भागीदारी को प्रायः अहिंसक कार्यों तक सीमित करके देखा गया।

## 2. साहित्य समीक्षा

### 2.1 प्रमुख ऐतिहासिक अध्ययन

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के ऐतिहासिक अध्ययन में डॉ. आर.सी. मजुमदार (1963) का महत्वपूर्ण स्थान है। उनकी बहुखंडीय कृति भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के क्रमिक विकास का विस्तृत ऐतिहासिक विवरण प्रस्तुत करती है। उन्होंने 1857 के विद्रोह से लेकर 1947 में स्वतंत्रता प्राप्ति तक की प्रमुख घटनाओं का तथ्यात्मक एवं क्रमबद्ध विश्लेषण किया है। उनके अनुसार स्वतंत्रता आंदोलन किसी एक घटना का परिणाम नहीं था, बल्कि यह अनेक दशकों तक चले राजनीतिक संघर्ष, सामाजिक जागरूकता और राष्ट्रीय चेतना के विकास का परिणाम था।

बिपिन चंद्रा (1988) ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक श्प्दकपंश्े जतनहहसम वित प्दकमचमदकमदबमश में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को एक व्यापक जन–आधारित राष्ट्रीय संघर्ष के रूप में प्रस्तुत किया है। उनके अनुसार स्वतंत्रता आंदोलन की वास्तविक शक्ति केवल राजनीतिक नेतृत्व में नहीं, बल्कि करोड़ों भारतीयों की सक्रिय भागीदारी में निहित थी। उन्होंने गांधी के नेतृत्व में चलाए गए असहयोग आंदोलन, नमक सत्याग्रह, सविनय अवज्ञा आंदोलन तथा भारत छोड़ो आंदोलन का विश्लेषण करते हुए स्पष्ट किया कि इन आंदोलनों ने भारतीय महिलाओं को पहली बार बड़े पैमाने पर सार्वजनिक जीवन और राजनीति से जोड़ा।

सुमित सरकार (1983) ने अपनी महत्वपूर्ण कृति 'Modern India' तथा अन्य लेखों में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का विश्लेषण सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टिकोण से किया है। उनके अनुसार स्वतंत्रता आंदोलन केवल राजनीतिक सत्ता परिवर्तन का प्रयास नहीं था, बल्कि भारतीय समाज के पुनर्गठन, सामाजिक चेतना और वर्गीय संबंधों में परिवर्तन की प्रक्रिया भी थी। उन्होंने राष्ट्रीय आंदोलन में किसानों, मजदूरों तथा महिलाओं की भागीदारी को विशेष महत्व दिया।

जुडिथ एम. ब्राउन (1977) ने अपनी पुस्तक 'Gandhi's Rise to Power' गांधी संबंधी अन्य अध्ययनों में महात्मा गांधी के नेतृत्व एवं जनआंदोलनों का विस्तृत विश्लेषण किया है। उनके अनुसार गांधी ने भारतीय राजनीति को अभिजात वर्ग तक सीमित न रखकर सामान्य जनता

तक पहुँचाया। विशेष रूप से महिलाओं की भागीदारी को उन्होंने गांधीवादी आंदोलन की महत्वपूर्ण उपलब्धि माना।

## 2.2 प्रमुख वीरांगनाओं पर साहित्य

### रानी लक्ष्मीबाई

1857 के स्वतंत्रता संग्राम में रानी लक्ष्मीबाई सबसे प्रमुख एवं सर्वाधिक चर्चित महिला सेनानायिका थीं। इतिहासकारों का मत है कि वे केवल एक वीर योद्धा ही नहीं थीं, बल्कि एक दूरदर्शी शासक, कुशल प्रशासक, सैन्य रणनीतिकार तथा राष्ट्रवादी नेतृत्व की सशक्त प्रतीक थीं।

**वी.डी. सावरकर (1909)** ने 'The Indian War of Independence 1857श में रानी लक्ष्मीबाई को 1857 के संघर्ष की सबसे प्रभावशाली नेता बताया है। उनके अनुसार रानी ने अद्वितीय साहस, संगठन क्षमता तथा युद्ध–कौशल का परिचय देते हुए अंग्रेजी सेना को लंबे समय तक चुनौती दी। सावरकर का मत है कि लक्ष्मीबाई का बलिदान भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की प्रेरणादायक घटनाओं में सर्वोच्च स्थान रखता है।

**एस.एन. सेन (1957)** ने रानी लक्ष्मीबाई के सैन्य नेतृत्व का विश्लेषण करते हुए उन्हें एक उत्कृ ष्ट सेनापति के रूप में प्रस्तुत किया। उनके अनुसार झाँसी की सुरक्षा व्यवस्था, सैनिक संगठन तथा युद्धनीति में रानी की असाधारण दक्षता स्पष्ट दिखाई देती है।

**गेराल्डिन फोर्ब्स (1996)** ने 'Women in Modern India' में रानी लक्ष्मीबाई को आधुनिक भारतीय महिला चेतना की अग्रणी माना है। उनके अनुसार लक्ष्मीबाई का व्यक्तित्व स्वतंत्रता आंदोलन के आगामी चरणों में

**झलकारी बाई** का नाम आधुनिक इतिहास लेखन में विशेष महत्व प्राप्त कर चुका है। प्रारंभिक इतिहासकारों ने उनके योगदान का सीमित उल्लेख किया, लेकिन हाल के दशकों में दलित इतिहास, सामाजिक इतिहास तथा महिला अध्ययन के विद्वानों ने उनके योगदान का पुनर्मूल्यांकन किया है। झलकारी बाई झाँसी की सेना की महत्वपूर्ण सदस्य थीं। संकट की घड़ी में उन्होंने रानी लक्ष्मीबाई का वेश धारण कर अंग्रेजी सेना को भ्रमित किया, जिससे रानी को सुरक्षित निकलने का अवसर प्राप्त हुआ।

**बेगम हजरत महल** ने अवध में अंग्रेजों के विरुद्ध सक्रिय भूमिका निभाई और स्थानीय शक्तियों तथा जनता को संगठित करने का प्रयास किया। रुद्रांशु मुखर्जी (2008) ने अपनी पुस्तक श ूंकी पद त्मअवसज 1857–58श में बेगम हजरत महल के नेतृत्व का विस्तृत विश्लेषण करते

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

हुए बताया कि उन्होंने केवल अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष ही नहीं किया, बल्कि अवध में वैकल्पिक शासन व्यवस्था स्थापित करने का भी सफल प्रयास किया।

**2.3 महिला शिक्षा एवं सामाजिक सुधार आंदोलन**

महिला शिक्षा एवं सामाजिक सुधार आंदोलनों ने स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी के लिए आधारभूमि तैयार की। राजा राममोहन राय, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, ज्योतिबा फुले तथा सावित्रीबाई फुले जैसे समाज सुधारकों ने महिलाओं की स्थिति में सुधार के लिए महत्वपूर्ण कार्य किया।

सावित्रीबाई फुले को महिलाओं की शिक्षा की पहली अग्रणी माना जाता हैय उन्होंने अपने पति ज्योतिबा फुले के साथ मिलकर लड़कियों के लिए पहला विद्यालय स्थापित किया। पंडिता रमाबाई ने विधवा पुनर्विवाह और महिलाओं की शिक्षा के लिए उल्लेखनीय योगदान दिया और श्शारदा सदनश की स्थापना की, जहाँ विधवाओं को न केवल शिक्षा बल्कि आत्मनिर्भर बनने का प्रशिक्षण भी दिया गया।

**2.4 महिला संगठन**

अखिल भारतीय महिला सम्मेलन की स्थापना 1927 में पुणे में हुई थी। यह भारत का सबसे बड़ा और सर्वाधिक प्रभावशाली महिला संगठन माना जाता है। ।IWC की स्थापना का प्रमुख उद्देश्य महिला शिक्षा का प्रचार–प्रसार करना था, लेकिन शीघ्र ही यह महिलाओं के राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक अधिकारों के लिए संघर्ष करने वाला एक प्रमुख मंच बन गया।

गेराल्डिन फोर्ब्स (1996) ने ।IWC की स्थापना एवं विकास का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत किया है। उनके अनुसार ।प्ॅ भारतीय महिला आंदोलन की सबसे महत्वपूर्ण संस्था थी, जिसने महिलाओं के मताधिकार, शिक्षा, विधवा पुनर्विवाह, बाल विवाह निषेध तथा संपत्ति अधिकारों के लिए संघर्ष किया।

**3. शोध पद्धति**

**3.1 शोध की प्रकृति**

प्रस्तुत शोध की प्रकृति ऐतिहासिक, वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक है। साथ ही यह अध्ययन गुणात्मक स्वरूप का है, क्योंकि इसमें संख्यात्मक तथ्यों की अपेक्षा ऐतिहासिक घटनाओं, दस्तावेजों, विचारों, सामाजिक परिस्थितियों तथा महिलाओं की भूमिका का गहन अध्ययन और विवेचन किया गया है।

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

### 3.2 शोध की रूपरेखा

शोध के लिए सर्वप्रथम महिलाओं के आंदोलनों एवं महिला स्वतंत्रता सेनानियों से संबंधित उपलब्ध साहित्य का व्यवस्थित एवं गहन अध्ययन किया गया। इसके अंतर्गत प्रमुख इतिहास ग्रंथों, शोध–प्रबंधों, शोध–पत्रों, पुस्तकों, लेखों, पत्र–पत्रिकाओं तथा अन्य प्रमाणित साहित्य का अध्ययन किया गया।

साहित्य समीक्षा के पश्चात् शोध के उद्देश्यों एवं परिकल्पनाओं का निर्धारण किया गया। शोध के उद्देश्यों में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका, उनके संघर्ष एवं त्याग, संगठनात्मक एवं नेतृत्व क्षमता तथा राष्ट्रीय आंदोलन पर उनके प्रभाव का अध्ययन प्रमुख रूप से सम्मिलित किया गया।

### 3.3 ऐतिहासिक शोध पद्धति

ऐतिहासिक शोध पद्धति सामाजिक विज्ञान की एक महत्वपूर्ण एवं वैज्ञानिक पद्धति है, जिसके माध्यम से अतीत की घटनाओं, परिस्थितियों, संस्थाओं, विचारधाराओं तथा व्यक्तियों का क्रमबद्ध, आलोचनात्मक एवं वस्तुनिष्ठ अध्ययन किया जाता है। इस पद्धति का प्रमुख उद्देश्य केवल अतीत की घटनाओं का वर्णन करना नहीं, बल्कि उनके कारणों, स्वरूप, पारस्परिक संबंधों, प्रभावों तथा ऐतिहासिक महत्व का विश्लेषण करना है।

### 3.4 प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोत

ऐतिहासिक शोध में तथ्यों एवं सूचनाओं की प्रमाणिकता सुनिश्चित करने के लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के स्रोतों का विशेष महत्व होता है। इस शोध में दोनों प्रकार के स्रोतों का समुचित एवं संतुलित उपयोग किया गया है।

''प्राथमिक स्रोतों'' में ब्रिटिश भारत सरकार के गृह विभाग की गोपनीय फाइलें, पुलिस एवं खुफिया विभाग की रिपोर्टें, प्रशासनिक पत्राचार, न्यायालयीन अभिलेख, महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, सरदार वल्लभभाई पटेल तथा अन्य राष्ट्रीय नेताओं द्वारा महिला कार्यकर्ताओं को लिखे गए पत्र, महिला स्वतंत्रता सेनानियों द्वारा लिखित आत्मकथाएँ, संस्मरण, समकालीन समाचार–पत्र एवं पत्रिकाएँ शामिल हैं।

''द्वितीयक स्रोतों'' में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम, राष्ट्रीय आंदोलन तथा आधुनिक भारत के इतिहास से संबंधित प्रमाणित ग्रंथ, महिलाओं की सामाजिक, राजनीतिक एवं राष्ट्रीय भूमिका पर आधारित पुस्तकें, देश–विदेश के विभिन्न विश्वविद्यालयों में किए गए शोध–प्रबंध एवं शोध–पत्र, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर की शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित शोध लेख, संदर्भ ग्रंथ एवं विश्वकोश शामिल हैं।

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

## 4. परिणाम एवं विश्लेषण

### 4.1 नमूने की जनसांख्यिकीय प्रोफाइल

अध्ययन में 300 प्रतिभागियों के आँकड़े सम्मिलित किए गए। लिंग वितरण लगभग समान रहा (पुरुष 49.3:, महिला 48.3:)। अधिकांश उत्तरदाता (57.0:) युवा आयु वर्ग (18–35 वर्ष) से संबंधित थे। उच्च शिक्षित वर्ग (63.3: स्नातकोत्तर एवं शोधार्थी) एवं शहरी क्षेत्रों (77.3:) का प्रमुख प्रतिनिधित्व रहा। ज्ञान–स्तर के अनुसार 32.0: उत्तरदाताओं ने अपने ज्ञान को तथा 26. 0: ने श्रेणी में व्यक्त किया।

### 4.2 उपकरण की विश्वसनीयता

सातों निर्माणों के क्रोनबैक अल्फा मान 0.656 से 0.721 के बीच पाए गए। सर्वाधिक क्रोनबैक अल्फा मान ऐतिहासिक मूल्यांकन निर्माण के लिए 0.721 प्राप्त हुआ, जबकि विभिन्न आंदोलनों में योगदान का अल्फा मान 0.656 रहा। अधिकांश निर्माणों के अल्फा मान लगभग 0.70 के आसपास प्राप्त हुए, जो स्वीकार्य आंतरिक स्थिरता को दर्शाते हैं।

### 4.3 निर्माण–वार वर्णनात्मक सांख्यिकी

सातों निर्माणों का कुल औसत 3.878 प्राप्त हुआ। सर्वोच्च औसत ऐतिहासिक मूल्यांकन (3.943) का रहा, उसके बाद संघर्ष एवं त्याग (3.929) तथा विभिन्न आंदोलनों में योगदान (3.922) का स्थान रहा। सामाजिक चुनौतियाँ (3.778) सबसे निचले स्थान पर रही, किंतु यह 3.00 के मध्य बिंदु से पर्याप्त रूप से अधिक है। सभी निर्माणों के बीच अधिकतम और न्यूनतम औसत में केवल 0.165 का अंतर पाया गया।

### 4.4 परिकल्पना परीक्षण

''परिकल्पना 1 (ज्ञान–स्तर एवं ऐतिहासिक मूल्यांकन)**:**'' पियर्सन सहसंबंध गुणांक त = 0.68 (च ढ .01) प्राप्त हुआ, जो ज्ञान–स्तर और ऐतिहासिक मूल्यांकन के बीच प्रबल सकारात्मक सहसंबंध दर्शाता है। परिकल्पना 1 समर्थित हुई।

''परिकल्पना 2 (लिंग एवं दृष्टिकोण)**:**'' स्वतंत्र नमूना t–परीक्षण में $t = 2.14$ ($p < .05$) प्राप्त हुआ। महिला उत्तरदाताओं का औसत 3.89 तथा पुरुषों का 3.78 रहा। परिकल्पना 2 समर्थित हुई।

''परिकल्पना 3 (आयु एवं दृष्टिकोण)**:**'' एक–तरफा ।छव्ट। में $F = 4.52$ ($p < .01$) प्राप्त हुआ। 56 वर्ष आयु वर्ग का औसत 3.96 तथा 18–25 वर्ष का 3.72 रहा। परिकल्पना 3 समर्थित हुई।

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

''परिकल्पना 4 (शिक्षा एवं दृष्टिकोण):'' । में F = 3.21 ($p < .05$) प्राप्त हुआ। परिकल्पना 4 समर्थित हुई।

''परिकल्पना 5 (निवास क्षेत्र एवं दृष्टिकोण):'' t = 1.45 ($p > .05$) प्राप्त हुआ, जो सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण नहीं है। परिकल्पना 5 समर्थित नहीं हुई।

**4.5 सहसंबंध विश्लेषण**

प्रमुख निर्माणों के बीच प्रबल सकारात्मक सहसंबंध पाए गए:

– सहभागिता और ऐतिहासिक मूल्यांकन : r = 0.762

– सामाजिक चुनौतियाँ और ऐतिहासिक मूल्यांकन : r = 0.769

– नेतृत्व और संघर्षध्त्याग : r = 0.751

**5. निष्कर्ष एवं सुझाव**

प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष बताते हैं कि श्ऐतिहासिक मूल्यांकनश (माध्य 3.943) सर्वोच्च स्थान पर है, इसके बाद 'संघर्ष एवं त्याग' (3.929) तथा शविभिन्न आंदोलनों में योगदानश (3.922) का स्थान है, जो महिला स्वतंत्रता सेनानियों की भूमिका, बलिदान एवं बहुआयामी सहभागिता की व्यापक स्वीकृति को दर्शाता है। श्सामाजिक चुनौतियाँश (3.778) निम्नतम रहीं, किंतु मध्य–बिंदु (3.00) से अधिक होने के कारण सामाजिक–औपनिवेशिक बाधाओं की स्वीकृति को रेखांकित करती हैं। सांख्यिकीय रूप से ज्ञान–स्तर (r=0.68, p<-01) और लिंग (t=2.14, p<-05), आयु (F=4.52, p<.01) तथा शिक्षा (F=3.21, p<-05) के आधार पर दृष्टिकोणों में महत्वपूर्ण अंतर पाए गए, जबकि निवास क्षेत्र (t=1.45, p>.05) का कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं था।

शैक्षणिक स्तर पर पाठ्यक्रम में महिलाओं के योगदान को अधिक गहराई, विस्तार एवं शिक्षण सामग्री (जीवनी, डिजिटल संसाधन, डॉक्यूमेंट्री) के साथ स्थान देने तथा क्षेत्रीय–आदिवासी–दलित महिला नेताओं पर शोध बढ़ाने की आवश्यकता है। नीतिगत स्तर पर स्मारकों, संग्रहालयों, स्मृति–स्थलों में समग्र, निष्पक्ष प्रस्तुति, सड़कों–संस्थानों का नामकरण, जयंती–पुण्यतिथि पर राजकीय समारोह, अभिलेखों के डिजिटलीकरण एवं सार्वजनिक उपलब्धता सुनिश्चित की जानी चाहिए। सार्वजनिक जागरूकता हेतु राष्ट्रीय–अंतर्राष्ट्रीय अवसरों पर कार्यक्रम, व्याख्यान, प्रदर्शनियाँ तथा मीडिया–सिनेमा के माध्यम से प्रमाणिक, संवेदनशील प्रस्तुति हेतु नीतिगत प्रोत्साहन, पुरस्कार एवं अनुदान विकसित किए जाने चाहिए। भविष्य के शोध में क्षेत्रीय, गुणात्मक (जीवनी–लेखन, मौखिक इतिहास, गहन साक्षात्कार), तुलनात्मक (विभिन्न आंदोलनों की नेतृत्व शैली), अंतःविषयक (इतिहास, राजनीति, समाजशास्त्र,

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

नारीवाद, मीडिया) तथा वास्तविक क्षेत्र–सर्वेक्षण पर आधारित अध्ययन आवश्यक हैं। अध्ययन की सीमाओं में संश्लिष्ट आँकड़े, शहरी–उच्च शिक्षित नमूने का अत्यधिक प्रतिनिधित्व, गुणात्मक विधियों का अभाव, सहसंबंधों से कार्य–कारण की स्थापना न हो पाना, तथा श्अन्यश लिंग श्रेणी में अत्यंत कम (7) उत्तरदाता होना प्रमुख हैं।

## 6. उपसंहार

यह शोध अध्ययन ष्भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिकाष विषयक 300 उत्तरदाताओं के संश्लिष्ट आँकड़ों के आधार पर सात प्रमुख निर्माणोंकृसहभागिता, नेतृत्व एवं संगठन क्षमता, सामाजिक चुनौतियाँ, विभिन्न आंदोलनों में योगदान, संघर्ष एवं त्याग, महिला सशक्तिकरण तथा ऐतिहासिक मूल्यांकनकृका विश्लेषण प्रस्तुत करता है। परिणाम स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं कि उत्तरदाताओं में स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका के प्रति अत्यंत सकारात्मक धारणा है, जिसका प्रमाण सातों निर्माणों का कुल औसत 3.878 (5–बिंदु पैमाने पर) है, जो महिलाओं के योगदान के विभिन्न पहलुओं की व्यापक स्वीकार्यता को रेखांकित करता है।

विशेष रूप से ऐतिहासिक मूल्यांकन (3.943), संघर्ष एवं त्याग (3.929) तथा विभिन्न आंदोलनों में योगदान (3.922) को सर्वाधिक महत्व मिला, जबकि सामाजिक चुनौतियाँ (3.778) एवं महिला सशक्तिकरण (3.826) अपेक्षाकृत कम प्राथमिकता पर रहे, यद्यपि ये माध्य भी 3.00 के मध्य–बिंदु से पर्याप्त रूप से अधिक हैं। परिकल्पना परीक्षणों से यह सिद्ध हुआ कि ज्ञान–स्तर, लिंग, आयु तथा शिक्षा के आधार पर दृष्टिकोण में सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर पाए गए, जबकि निवास क्षेत्र के आधार पर महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया, जो शैक्षणिक एवं ज्ञानगत कारकों की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करता है। प्रमुख निर्माणों के बीच प्रबल सकारात्मक सहसंबंधकृसहभागिता और ऐतिहासिक मूल्यांकन ($r = 0.762$), सामाजिक चुनौतियाँ और ऐतिहासिक मूल्यांकन ($r = 0.769$), नेतृत्व और संघर्षध्त्याग ($r = 0.751$)कृपाए गए, जो दर्शाते हैं कि महिलाओं की भूमिका के विभिन्न आयाम उत्तरदाताओं की धारणा में परस्पर संबंधित हैं।

अध्ययन यह निष्कर्ष निकालता है कि महिलाओं को भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में केवल सहायक भूमिका निभाने वाली प्रतिभागी के रूप में देखने के स्थान पर सक्रिय सहभागी, नेतृत्वकर्ता, संगठनकर्ता, संघर्षशील व्यक्तित्व, सामाजिक परिवर्तन की वाहक तथा महत्वपूर्ण ऐतिहासिक योगदानकर्ता के रूप में देखा जाना चाहिए। अध्ययन के सुझाव शैक्षणिक, नीतिगत एवं भविष्य के शोध के लिए दिशा–निर्देश प्रदान करते हैंकृपाठ्यक्रम में महिला स्वतंत्रता सेनानियों के

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

योगदान को अधिक स्थान दिए जाने, शिक्षण सामग्री के विकास, ऐतिहासिक स्मारकों एवं संग्रहालयों में समग्र प्रस्तुति, अभिलेखीय संरक्षण, सार्वजनिक कार्यक्रमों एवं मीडिया के माध्यम से जागरूकता अभियानों पर बल दिया गया है। अध्ययन की सीमाओं में संश्लिष्ट आँकड़ों पर आधारित होना, नमूने में शहरी एवं उच्च शिक्षित वर्ग का अधिक प्रतिनिधित्व, केवल मात्रात्मक दृष्टिकोण, कार्य–कारण संबंध स्थापित करने में असमर्थता, विशिष्ट ऐतिहासिक संदर्भ, सैद्धांतिक अनुप्रयोग की सीमाएँ तथा श्अन्यश लिंग श्रेणी में अत्यंत कम (7) उत्तरदाता होना शामिल हैं।

निष्कर्षतः यह अध्ययन महिलाओं को भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में केवल सहायक भूमिका निभाने वाली प्रतिभागी के रूप में देखने के स्थान पर सक्रिय सहभागी, नेतृत्वकर्ता, संगठनकर्ता, संघर्षशील व्यक्तित्व, सामाजिक परिवर्तन की वाहक तथा महत्वपूर्ण ऐतिहासिक योगदानकर्ता के रूप में देखने वाली धारणा को प्रस्तुत करता है, और यह आवश्यकता रेखांकित करता है कि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास का अध्ययन करते समय महिलाओं के योगदान को अधिक समग्र, संतुलित एवं वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण से समझा और प्रस्तुत किया जाए।

## संदर्भ सूची

1. चंद्र, बिपिन (1988). 'भारत का स्वतंत्रता संग्राम'. नई दिल्लीः पेंगुइन बुक्स.

2. सरकार, सुमित (1983). 'आधुनिक भारत 1885–1947'. नई दिल्लीः मैकमिलन इंडिया.

3. मजुमदार, आर.सी. (1963). 'भारत में स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास'. कोलकाताः फर्मा के. एल. मुखोपाध्याय.

4. फोर्ब्स, जेराल्डिन (1996). 'आधुनिक भारत में महिलाएँ'. कैम्ब्रिजः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.

5. ब्राउन, जुडिथ एम. (1977). 'गांधी का सत्ता की ओर उदयः भारतीय राजनीति 1915–1922'. कैम्ब्रिजः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.

6. सावरकर, वी.डी. (1909). '1857 का भारतीय स्वतंत्रता संग्राम'. फीनिक्स प्रेस.

7. सेन, एस.एन. (1957). '1857ः महान विद्रोह'. पीपल्स पब्लिशिंग हाउस.

8. मुखर्जी, रुद्रांशु (2008). 'अवध में विद्रोहः 1857–58'. परमानेंट ब्लैक.

9. कुमार, राधा (1993). 'कार्य का इतिहासः भारत में महिला अधिकारों और नारीवादी आंदोलनों का सचित्र विवरण, 1800–1990'. नई दिल्लीः काली फॉर वुमेन.

10. सरकार, तनिका (2001). 'हिन्दू पत्नी, हिन्दू राष्ट्र: समुदाय, धर्म और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद'. नई दिल्ली: परमानेंट ब्लैक.

11. मजुमदार, वीना (1979). 'शक्ति के प्रतीक: भारत में महिलाओं की राजनीतिक स्थिति का अध्ययन'. मुंबई: एलाइड पब्लिशर्स.

12. रमाबाई, पंडिता (1887). 'स्त्री धर्म नीति'. (मूल प्रकाशन)

13. फुले, सावित्रीबाई (1854). 'काव्यफुले'. (मूल प्रकाशन)

14. अली, अरुणा आसफ (1991). 'भारतीय महिलाओं का पुनरुत्थान'. नई दिल्ली: रेडियंट पब्लिकेशन्स.

15. चट्टोपाध्याय, कमलादेवी (1986). 'आत्मकथा: आंतरिक गहराइयाँ और बाहरी दुनिया'. नई दिल्ली: नंदन प्रकाशन.

16. देशमुख, दुर्गाबाई (1975). 'मेरी जीवन यात्रा'. स्टर्लिंग पब्लिशर्स.

17. पंडित, विजयलक्ष्मी (1970). 'खुशी का दायरा'. हार्पर एंड रो.

18. नायडू, सरोजिनी (1956). 'सरोजिनी नायडू के चयनित पत्र'. (मनमोहन कुमार, संपादक)

19. गांधी, मोहनदास करमचंद (1927). 'सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा'. अहमदाबाद: नवजीवन प्रकाशन.

20. तेंदुलकर, डी.जी. (1951). 'महात्मा: मोहनदास करमचंद गांधी का जीवन'. मुंबई: विलयभाई के. झवेरी एवं डी.जी. तेंदुलकर.

21. नेहरू, जवाहरलाल (1946). 'भारत की खोज'. कोलकाता: सिग्नेट प्रेस.

22. मेहता, उषा (1994). 'गुप्त कांग्रेस रेडियो: संस्मरण'. ऑल इंडिया कांग्रेस कमेटी.

23. कस्तूरी, लीला एवं मजुमदार, वीना (संपा.) (1994). 'महिलाएँ और भारतीय राष्ट्रवाद'. नई दिल्ली: विकास पब्लिशिंग हाउस.

24. कुमार, सुनील (2005). 'कांग्रेस और महिला भागीदारी: 1917–1947'. नेशनल पब्लिशर्स.

25. बसु, अपर्णा (1994). "अखिल भारतीय महिला सम्मेलन: दस्तावेजों का अध्ययन." 'भारतीय इतिहास जर्नल', खंड 72, अंक 1, पृ. 45–68.

26. रामुसैद, बारबरा (1992). 'भारत में महिलाएँ: एक सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास'. एबीसी–सीएलआईओ.

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

27. कुमार, राधा (1993). "महिला अधिकार और नारीवाद: भारतीय परिप्रेक्ष्य-" 'ओरिएंट ब्लैकस्वान'.

28. सेन, अपर्णा (संपा.) (1990). 'महिलाएँ और सशक्तिकरण: मानवशास्त्रीय एवं ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य'. नई दिल्ली: संबंधित अकादमिक प्रकाशन.

29. चौधरी, मैत्रेयी (2004). 'भारत में नारीवाद'. नई दिल्ली: काली फॉर वुमेन.

30. फोर्ब्स, जेराल्डिन (1996). "आधुनिक भारत में महिलाएँ." 'न्यू कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ इंडिया', खंड 4.2, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.